

साहित्यिक योगदान

स्कूल काल में लगभग 13 वर्ष की उम्र से ही 'रमेश शायर' ने अपना लेखन कार्य शुरू किया। पर अपनी रचनाओं का सही रिकॉर्ड रखना 'रमेश शायर' ने कॉलेज काल से शुरू किया। ज़िन्दगी के अनुभवों ने 'रमेश शायर' के लेखन कार्य को ओर भी परिपक्व बनाया।

रमेश शायर की छाप कॉलेज काल में रोमैन्टीक शायर, लघु उपन्यास लेखक के रूप में उभरी। पर ज्यों ज्यों समय बीता और ज़िन्दगी में धोखे मिले त्यों त्यों वे दर्द-ए-दिल शायर एवम् लेखक बनते गये। उनकी रचनाओं में प्यार, पीड़ा की अभिव्यक्ति एवम् समकालीन घटनाओं और देश की परिस्थितियों को उजागर किया गया है। 'लोहपुरुष सरदार पटेल' पुस्तिका की सभी रचनायें 'रमेश शायर' ने भूतपूर्व नाणा मन्त्री एवम् शिक्षण जगत के मसीहा श्री एच.एम. पटेल साहिबजी के आदेश और आशीर्वाद से लिखी। जिसका उल्लेख स्वयं 'रमेश शायर' ने इस पुस्तिका की प्रस्तावना में किया है।

'रमेश शायर' लिखित लघु उपन्यास 'नीलकमल' उनके जीवित रहते पूर्णता पर नहीं पहुँच सका। अतः इसे उनकी मृत्युपर्यंत छोटी पुत्री रिन्कु रमेश शायर ने पूर्ण किया।

'रमेश शायर' के लेखन कार्य में एक तत्त्वचिंतक, राजनीति विश्लेषक, देशभक्ति, पागल प्रेमी, प्रामाणिक पति जैसे गुणों की झलक दिखाई देती है।

वर्ष क्रमानुसार उनके साहित्यसृजन को निम्नांकित कोष्ठक से देखा जा सकता है।

मुख्य साहित्यिक सफ़र

वर्ष	पुस्तिका
1973	नीलकमल (लघु उपन्यास)
1978	मुहब्बत का दुश्मन यह समाज ? (लघु उपन्यास)
1984	दर्द दिल (शायरी)
1986	जलते अरमान (शायरी)
1988	एक टूटे हुए दिल की दास्तान (शायरी)
1990	लोह पुरुष सरदार पटेल (शायरी)
1993	अधूरा जीवन (लेख)
2012	दिले शायर की वेदना (भाग-1) (शायरी)
2016	दिले शायरी की वेदना (भाग-2) (शायरी)
2019	आखिर कब तक ? (शायरी)
2019-2021	पत्र पूंज
---	उठो, जागो ! कहीं ऐसा न हो ? (लेख)

---	“कब बुझेंगी यह आग ?” (लेख)
2008	आणंद में... गुजरात भाटिया समाज का 35 वाँ वार्षिक सम्मेलन (लेख)
---	एक चिंगारी आग बन कर ? (लेख)
---	“देश सारा जल रहा है” (लेख)
---	आज का भारत (शायरी)